Edit with WPS Office

मीरा के पद

(प्रश्न -उत्तर)

अतिरिक्त प्रश्न:

Edit with WPS Office

1◆ मीरा बाई किस काल की कवयित्री है?

उत्तर:- मीराबाई भक्तिकाल की कवयित्री हैं।

2◆गुरु की कृपा क्यों जरूरी है?

उत्तर: गुरु की कृपा इसलिये जरूरी है क्योंकि उनके कृपा से सही भक्ति की राह पर चल कर ही मनुष्य ईश्वर प्राप्ति

Edit with WPS Office

कर जीवन सफल बनाता है।

3◆ 'मीरा के प्रभु सदा सहाई, राखे विघन हटाए' -पंक्ति का अर्थ बताइये।

उत्तर- पंक्ति का अर्थ है मीरा के प्रभु ,उनके आराध्य कृष्ण सदैव की उनका सहारा बने रहते है।जो मीरा पर आने वाली हर बाधा - विघ्न अर्थात मुसीबतों को दूर कर देते है।

Edit with WPS Office

4◆ मीरा ने संसार की तुलना किससे की है?

उत्तर: मीरा ने संसार की तुलना गहरे सागर से की है।

5◆ जहर का प्याला ग्रहण करने के बाद क्या हुआ ?

उत्तर - ज़हर का प्याला ग्रहण करने के बाद भगवान कृष्ण की कृपा से वह प्याला अमृत के प्याले में बदल गया।जिसे पीने के बाद मीरा अमर हो

Edit with WPS Office

गई।

6◆ नाव किस चीज की है ?उसे चलाने वाला कौन है?

उत्तर: नाव सत्य की है ।उसे चलाने वाले सतगुरु हैं।

Edit with WPS Office

प्रश्न 2 : प्रभु ने मीरा की रक्षा किस प्रकार की?

उत्तर : प्रभु ने मीरा की रक्षा निम्नलिखित प्रकार से की :

१) प्रभु ने साँप को सालिगराम (भगवान की मूर्ति) में बदल दिया।

२) प्रभु ने ज़हर को अमृत में बदल दिया।

३) प्रभु ने काँटों को फूलों में बदल दिया।

Edit with WPS Office

प्रश्न 4 : मीरा की भक्ति से नीचे लिखी वस्तुएँ किस-किस में बदल गईं ?

(क) साँप का पिटारा (ख) काँटों की सेज (ग) ज़हर का प्याला

उत्तर : (क) साँप का पिटारा - सालिगराम में (भगवान की मूर्ति)

(ख) काँटों की सेज - फूलों में

(ग) ज़हर का प्याला - अमृत में

Edit with WPS Office

- पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो।
  वस्तु अमोलक दई म्हारे सतगुरू, किरपा कर अपनायो॥
  जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
  खरच न खूटै चोर न लूटै, दिन-दिन बढ़त सवायो।।
  सत की नाँव खेवटिया सतगुरू, भवसागर तर आयो।
  'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, हरख-हरख जस गायो॥
  :::——- प्रस्तुत पंक्तियों में मीरा कह रही हैं कि उन्होंने कृष्ण के नाम का रत्न धन पा लिया है। उनके सतगुरु ने उन्हें अपना कर उनपर कृपा की तथा इस नाम रूपी अमूल्य धन को सौंपा। मीरा ने इस संसार में सब कुछ खो कर इस जन्म जन्म की पूंजी को पाया। ये नाम रूपी धन ऐसा है जो न खर्च करने से कम होता है और न इसे कोई चोर लूट पाता है, इसमे तो दिनों दिन सवा गुणा बढ़त होती रहती है। मीरा ने सत्य की नाव जिसके खेवनहार सतगुरु हैं पर बैठ कर भवसागर पार कर लिया है। मीरा कहती हैं कि मेरे प्रभु गिरिधर श्रीकृष्ण हैं, ओर में उन्ही का यश गाती हूँ।

Edit with WPS Office